5 केशवदास

हिन्दी काव्य-जगत् में रीतिवादी परम्परा के संस्थापक, प्रचारक महाकवि केशवदास का जन्म मध्य भारत के ओरछा (बुन्देलखण्ड) राज्य में संवत् 1612 वि0 (सन् 1555 ई0) में हुआ था। ये सनाढ्य-ब्राह्मण कृष्णदत्त के पौत्र तथा काशीनाथ के पुत्र थे। 'विज्ञान गीता' में वंश के मूल पुरुष का नाम वेदव्यास उल्लिखित है। ये भारद्वाज गोत्रीय मार्दनी शाखा के यजुर्वेदी मिश्र उपाधिधारी ब्राह्मण थे। तत्कालीन जिन विशिष्ट जनों से इनका घनिष्ठ परिचय था उनके नाम हैं—अकबर, बीरबल, टोडरमल और उदयपुर के राणा अमरसिंह। तुलसीदास जी से इनका साक्षात्कार महाराज इन्द्रजीत के साथ काशी-यात्रा के समय हुआ था। ओरछाधिपति महाराज इन्द्रजीत सिंह इनके प्रधान आश्रयदाता थे, जिन्होंने 21 गाँव इन्हें भेंट में दिये थे। वीरसिंह देव का आश्रय भी इन्हें प्राप्त था। उच्चकोटि के रसिक होने पर भी ये पूरे आस्तिक थे। व्यवहारकुशल, वाग्विदग्ध, विनोदी, नीति-निपुण, निर्भीक एवं स्पष्टवादी केशव की प्रतिभा सर्वतोमुखी थी। साहित्य और संगीत, धर्मशास्त्र व राजनीति, ज्योतिष और वैद्यक सभी विषयों का इन्होंने गम्भीर अध्ययन किया था। ये संस्कृत के विद्वान् तथा अलंकारशास्त्री थे और इसी कारण हिन्दी काव्यक्षेत्र में अवतीर्ण होने पर स्वभावतः इन्होंने शास्त्रानुमोदित प्रथा पर ही साहित्य का प्रचार करना उचित समझा। हिन्दी साहित्य में ये प्रथम महाकवि हुए हैं जिन्होंने संस्कृत के आचार्यों की परम्परा का हिन्दी में सूत्रपात किया था। संवत् 1674 वि0 (सन् 1617 ई0) के लगभग इनका स्वर्गवास हुआ था।

कवि-एक संक्षिप्त परिचय

- **जन्म**—संवत् 1612 वि0 (1555 ई०)।
- **जाति**—ब्राह्मण।
- **जन्म-स्थान**—ओरछा (बुंदेलखण्ड)।
- **पिता**—काशीनाथ मिश्र।
- **भाषा**—ब्रज भाषा।
- **शैली**—प्रबन्ध, मुक्तक।
- **प्रमुख रचनाएँ**—रामचंद्रिका, रसिकप्रिया, विज्ञान-गीता, नख-शिख, छन्दमाला, वीरसिंह देव चरित, रतनबावनी, जहाँगीर जस चन्द्रिका।
- **मृत्यु**—संवत् 1674 वि0 (1617 ई०)।
- **साहित्य में स्थान**—अपनी छन्द वैविध्यता के कारण इन्हें हिन्दी साहित्य में आदरणीय स्थान प्राप्त है। इन्हें हिन्दी साहित्य के प्रथम आचार्य कवि तथा रीतिकाल का प्रवर्तक माना जाता है।

महाकवि केशवदास का समय भक्ति तथा रीतिकाल का सन्धियुग था। तुलसी तथा सूर ने भक्ति की जिस पावन धारा को प्रवाहित किया था, वह तत्कालीन राजनीतिक एवं सामाजिक परिस्थितिवश क्रमशः ह्रासोन्मुख और क्षीण हो रही थी। दूसरी ओर जयदेव तथा विद्यापति ने जिस शृंगारिक कविता की नींव डाली थी, उसके अभ्युदय का आरम्भ हो चुका था। वास्तुकला

तथा ललित कलाओं का उत्कर्ष इस युग की ऐतिहासिक उपलब्धि थी। अब कविता भक्ति या मुक्ति का विषय न होकर वृत्ति का स्थान ले चुकी थी। भाव-पक्ष की अपेक्षा कला-पक्ष को प्रधानता मिल रही थी। महाकवि केशव इस काल के न केवल प्रतिनिधि कवि थे, अपितु युग प्रवर्तक भी रहे।

केशवदास लगभग 16 ग्रन्थों के रचयिता माने जाते हैं। उनमें से आठ ग्रन्थ असन्दिग्ध एवं प्रामाणिक हैं। इन आठ प्रामाणिक ग्रन्थों में से '**रामचन्द्रिका**' भक्ति सम्बन्धी ग्रन्थ है, जिसमें केशव ने राम और सीता को अपना इष्टदेव माना है और राम-नाम की महिमा का गुणगान किया है। यह ग्रन्थ पण्डितों के पाण्डित्य को परखने की कसौटी है। छन्द-विधान की दृष्टि से भी यह ग्रन्थ महत्त्वपूर्ण है। संस्कृत के अनेक छन्दों को भाषा में ढालने में केशव को अपूर्व सफलता मिली है। '**विज्ञानगीता**' में केशव ने ज्ञान की महिमा गाते हुए जीव को माया से छुटकारा पाकर ब्रह्म से मिलने का उपाय बतलाया है। ये दोनों ग्रन्थ धार्मिक प्रबन्ध काव्य हैं। '**वीरसिंहदेव चरित**', '**जहाँगीर जसचन्द्रिका**' और '**रतन बावनी**' ये तीनों ही ग्रन्थ चारणकाल की स्मृति दिलाते हैं। ये ग्रन्थ ऐतिहासिक प्रबन्ध काव्य की कोटि में आते हैं। काव्यशास्त्र सम्बन्धी ग्रन्थ '**रसिकप्रिया**' में रस विवेचन तथा नायिका भेद; '**कविप्रिया**' में कवि-कर्त्तव्य तथा अलंकार और '**नख-शिख**' में नख-शिख वर्णन किया गया है। इनके द्वारा कवि ने रीति-साहित्य का शिलान्यास किया है।

वीर रस का अपने काव्य में केशव ने अच्छा पुट दिया है। प्राकृतिक सौन्दर्य के वर्णन की इनमें कमी है, तो राजसी वैभव का अच्छा वर्णन किया है। अलंकारवादी आचार्य होने के कारण ये अलंकार के विधान में अत्यधिक कुशल थे। केशव के समय में दो काव्य-भाषाएँ थीं—अवधी और ब्रज। इन्होंने ब्रजभाषा को ही अपनी काव्य-भाषा के रूप में अपनाया। केशव बुन्देलखण्ड के निवासी थे। बुन्देलखण्डी भाषा और ब्रज-भाषा में बहुत कुछ साम्य है, अतः इनकी भाषा को बुन्देलखण्डी मिश्रित ब्रजभाषा कहना अधिक उपयुक्त होगा।

काव्य में अलंकारों के महत्त्व पर तो केशव का मत ही है—

जदपि सुजाति सुलक्षणी, सुबरन सरस सुवृत्त।
भूषण बिनु न बिराजई, कविता बनिता मित्त।

–कविप्रिया

केशव की रचना में इनके तीन रूप दिखायी देते हैं—आचार्य का, महाकवि का और इतिहासकार का। ये परमार्थतः हिन्दी के प्रथम आचार्य थे। आचार्य का आसन ग्रहण करने पर इन्हें संस्कृत की शास्त्रीय पद्धति को हिन्दी में प्रचलित करने की चिन्ता हुई जो जीवन के अन्त तक बनी रही। इनके एक प्रशंसक ने सूर और तुलसी के बाद तीसरे स्थान पर हिन्दी कवियों में केशव को ही माना है—

सूर-सूर तुलसी ससी, उडुगन केशवदास।
अब के कवि खद्योत सम जह-तह करत प्रकाश।।

●●●

स्वयंवर-कथा

[प्रस्तुत अंश केशवदास के सुप्रसिद्ध प्रबन्ध काव्य 'रामचन्द्रिका' के 'स्वयंवर कथा' से अवतरित है। इसमें सीताजी के स्वयंवर की कथा कही गयी है। इन अंशों में मुख्य रूप से श्रीराम का आगमन, विश्वामित्र द्वारा राजा जनक से परिचय, श्रीराम द्वारा शिव धनुष की प्रत्यंचा चढ़ाकर धनुष भंग का वर्णन किया गया है।]

खंडपरस को सोभिजै, सभामध्य कोदंड।
मानहुँ शेष अशेष धर, धरनहार बरिबंड।।1।।

(सवैया)

सोभित मंचन की अवली गजदंतमयी छवि उज्ज्वल छाई।
ईश मनौ वसुधा में सुधारि सुधाधरमंडल मंडि जोन्हाई।
तामहँ केशवदास विराजत राजकुमार सबै सुखदाई।
देवन स्यों जनु देवसभा सुभ सीयस्वयंवर देखन आई।।2।।

(घनाक्षरी)

पावक पवन मणिपन्नग पतंग पितृ,
जेते ज्योतिवंत जग ज्योतिषिन गाये हैं।
असुर प्रसिद्ध सिद्ध तीरथ सहित सिंधु,
केशव चराचर जे वेदन बताये हैं।
अजर अमर अज अंगी औ अनंगी सब,
बरणि सुनावै ऐसे कौन गुण पाए हैं।
सीता के स्वयंवर को रूप अवलोकिबे को,
भूपन को रूप धरि विश्वरूप आये हैं।।3।।

(सवैया)

सातहु दीपन के अवनीपति हारि रहे जिय में जब जाने।
बीस बिसे व्रत भंग भयो, सो कहौ, अब, केशव, को धनु ताने?
शोक की आगि लगी परिपूरण आइ गये घनश्याम बिहाने।
जानकि के जनकादिक के सब फूलि उठे तरुपुण्य पुराने।।4।।

विश्वामित्र और जनक की भेंट

(दोधक छन्द)

आइ गये ऋषि राजहिं लीने। मुख्य सतानँद विप्र प्रवीने।
देखि दुवौ भये पाँयनि लीने। आशिष शीरषबासु लै दीनै।।5।।

(सवैया)

विश्वामित्र

केशव ये मिथिलाधिप हैं जग में जिन कीरतिबेलि बयी है।
दान-कृपान-विधानन सों सिगरी वसुधा जिन हाथ लयी है।
अंग छ सातक आठक सों भव तीनिहु लोक में सिद्धि भयी है।।
वेदत्रयी अरु राजसिरी परिपूरणता शुभ योगमयी है।।6।।

(सोरठा)

जनक– जिन अपनो तन स्वर्ण, मेलि तपोमय अग्नि मैं।
कीन्हों उत्तमवर्ण, तेई विश्वामित्र ये।।7।।

(मोहन छन्द)

लक्ष्मण–जन राजवंत। जग योगवंत।
तिनको उदोत। केहि भाँति होत।।8।।

(विजय छन्द)

श्रीराम-

सब छत्रिन आदि दै काहु हुई न छुए बिजनादिक बात डगै।
न घटै न बढ़ै निशि बासर केशव लोकन को तमतेज भगै।
भवभूषण भूषित होत नहीं मदमत्त गजादि मसी न लगै।
जलहूँ थलहूँ परिपूरण श्री निमि के कुल अद्‌भुत ज्योति जगै।।9।।

(तारक छन्द)

जनक-यह कीरति और नरेशन सोहै।
सुनि देव अदेवन को मन मोहै।
हम को बपुरा सुनिए ऋषिराई।
सब गाँऊँ छ सातक की ठकुराई।।10।।

(विजय छन्द)

विश्वामित्र-

आपने आपने ठौरनि तौ भुवपाल सबै भुव पालै सदाई।
केवल नामहि के भुवपाल कहावत हैं भुवि पालि न जाई।
भूपति की तुमहीं धरि देह बिदेहन में कल कीरति गाई।
केशव भूषन को भवि भूषण भू तन तै तनया उपजाई।।11।।

(दोधक छन्द)

जनक- ये सुत कौन के सोभहिं साजे?
सुंदर श्यामल गौर विराजे।
जागत हौं जिय सोदर दोऊ।
कै कमला विमला पति कोऊ।।12।।

(घनाक्षरी)

विश्वामित्र-दानिन के शील, पर दान के प्रहारी दिन,
दानवारि ज्यों निदान देखिए सुभाय के।
दीप दीप हूँ के अवनीपन के अवनीप,
पृथु सम केशोदास दास द्विज गाय के।
आनँद के कंद सुरपालक से बालक ये,
परदारप्रिय साधु मन वच काय के।
देहधर्मधारी पै विदेहराज जू से राज,
राजत कुमार ऐसे दशरथ राय के।।13।।

(तारक छन्द)

रघुनाथ शरासन चाहत देख्यो।
अति दुष्कर राजसमाजनि लेख्यो।

जनक–ऋषि है वह मंदिर माँझ मँगाऊँ।
गहि ल्यावहि हौं जनयूथ बुलाऊँ।।14।।

(दण्डक छन्द)

बज्र तें कठोर है, कैलास ते विशाल, काल-
दंड तें कराल, सब काल काल गावई।

केशव त्रिलोक के विलोक हारे देव सब,
छोड़ चंद्रचूड़ एक और को चढ़ावई?
पन्नग प्रचंड पति प्रभु की पनच पीन,
पर्वतारि-पर्वत-प्रभा न मान पावई।
विनायक एकहू पै आवै न पिनाक ताहि,
कोमल कमलपाणि राम कैसे ल्यावई।।15।।

(तोमर)

विश्वामित्र- सुनि रामचंद कुमार। धनु आनिए यहि बार।।
पुनि बेगि ताहि चढ़ाव। यश लोक लोक बढ़ाव।।16।।

(दो0) ऋषिहि देखि हरष्यो हियो, राम देखि कुम्हलाइ।
धनुष देखि डरपै महा, चिन्ता चित्त डोलाइ।।17।।

(स्वागता छन्द)

रामचंद्र कटिसों पटु बाँध्यो। लीलयैव हर को धनु साँध्यो।।
नेकु ताहि करपल्लव सों छ्वै। फूलमूल जिमि टूक कर्‌यो द्वै।।18।।

(सवैया)

उत्तम गाथ सनाथ जबै धनु श्री रघुनाथ जू हाथ कै लीनो।
निर्गुण ते गुणवंत कियो सुख केशव संत अनंतन दीनो।
ऐंचो जहीं तबहीं कियो संयुत तिच्छ कटाच्छ नराच नवीनो।
राजकुमारि निहारि सनेह सों शंभु को साँचो शरासन कीनो।।19।।

प्रथम टंकोर झुकि झारि संसार मद,
चंड कोदंड रह्यो मंडि नव खंड को।
चालि अचला अचल घालि दिगपाल बल,
पालि ऋषिराज के बचन परचंड को।
सोधु दै ईश को, बोधु जगदीश को,
क्रोधु उपजाइ भृगुनंद बरिवंड को।
वाधि वर स्वर्ग को, साधि अपवर्ग, धनु-
भंग को शब्द गयो भेदि ब्रह्मांड को।।20।।

('रामचन्द्रिका' से)

अभ्यास प्रश्न

➥ पद्यांश पर आधारित प्रश्न

1. निम्नलिखित पद्यांशों को पढ़कर उनके नीचे दिये गये प्रश्नों का उत्तर लिखिए—

स्वयंवर कथा

(क)

सोभित मंचन की अवली गजदंतमयी छवि उज्ज्वल छाई।
ईश मनौ वसुधा में सुधारि सुधाधरमंडल मंडि जोन्हाई।
तामहँ केशवदास विराजत राजकुमार सबै सुखदाई।
देवन स्यों जनु देवसभा सुभ सीयस्वयंवर देखन आई।।

प्रश्न– (i) उपर्युक्त पद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।
अथवा पद्यांश के कवि एवं शीर्षक का नाम लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) सीता के स्वयंवर को देखने के लिए कौन चली आयी है?
(iv) सुन्दर उज्ज्वल छवि वाले मंच किस वस्तु के बने हैं?
(v) प्रस्तुत पद्यांश में कौन-सा अलंकार है?

(ख)

सातहु दीपन के अवनीपति हारि रहे जिय में जब जाने।
बीस बिसे व्रत भंग भयो, सो कहौ, अब, केशव, को धनु ताने?
शोक की आगि लगी परिपूरण आइ गये घनश्याम बिहाने।
जानकि के जनकादिक के सब फूलि उठे तरुपुण्य पुराने।।

प्रश्न– (i) उपर्युक्त पद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।
अथवा पद्यांश के कवि एवं कविता का नाम लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) स्वयंवर में श्रीरामचन्द्र के आगमन से किसके पूर्व जन्म के पुण्य पुष्पवान हो गये?
(iv) राजा जनक की प्रतिज्ञा भंग होने की दशा में क्यों आ गयी?
(v) भगवान राम किसके साथ जनकपुर पहुँचे?

विश्वामित्र और जनक की भेंट

(ग)

केशव ये मिथिलाधिप हैं जग में जिन कीरतिबेलि बयी है।
दान-कृपान विधानन सों सिगरी वसुधा जिन हाथ लयी है।।
अंग छ सातक आठक सों भव तीनिहु लोक में सिद्धि भयी है।।
वेदत्रयी अरु राजसिरी परिपूरणता शुभ योगमयी है।।

प्रश्न– (i) उपर्युक्त पद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।
अथवा पद्यांश के कवि एवं शीर्षक का नाम लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) मिथिलापुरी के राजा कौन हैं?
(iv) किसकी कीर्ति की बेल सम्पूर्ण संसार में फैली हुई है?
(v) "अंग छ सातक आठक सों भव तीनिहु लोक में सिद्धि भयी है।"
पंक्ति में किस विधि द्वारा सिद्धि-प्राप्ति की बात कही गयी है?

(घ)

दानिन के शील, पर दान के प्रहारी दिन,
दानवारि ज्यों निदान देखिए सुभाय के।
दीप दीप हूँ के अवनीपन के अवनीप,
पृथु सम केशोदास दास द्विज गाय के।
आनँद के कंद सुरपालक से बालक ये,
परदारप्रिय साधु मन वच काय के।
देहधर्मधारी पै विदेहराज जू से राज,
राजत कुमार ऐसे दशरथ राय के।

प्रश्न– (i) उपर्युक्त पद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।
अथवा पद्यांश के कवि एवं पाठ का नाम लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) प्रस्तुत पद्य में विश्वामित्रजी किनका परिचय किससे दे रहे हैं?
(iv) विश्वामित्र जी ने राम और लक्ष्मण जी के किन-किन गुणों पर प्रकाश डाला है?
(v) प्रस्तुत पंक्ति में कौन-सा अलंकार है?

(ङ)

बज्र तें कठोर है, कैलास तें विशाल, काल-
दंड तें कराल, सब काल काल गावई।
केशव त्रिलोक के विलोक हारे देव सब,
छोड़ चंद्रचूड़ एक और को चढ़ावई?
पन्नग प्रचंड पति प्रभु की पनच पीन,
पर्वतारि-पर्वत-प्रभा न मान पावई।
विनायक एकहू पै आवै न पिनाक ताहि,
कोमल कमलपाणि राम कैसे ल्यावई।।

प्रश्न– (i) उपर्युक्त पद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।
अथवा पद्यांश के कवि एवं शीर्षक का नाम लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) प्रस्तुत पद्यांश में वक्ता एवं श्रोता का नाम लिखिए।
(iv) जनकजी ने शिवजी के धनुष की क्या विशेषताएँ बतायी हैं?
(v) प्रस्तुत पद्य में काल का काल किसे कहा गया है?

(च) उत्तम गाथ सनाथ जबै धनु श्री रघुनाथ जू हाथ कै लीनो।
निर्गुण ते गुणवंत कियो सुख केशव संत अनंतन दीनो।
ऐंचो जहीं तबहीं कियो संयुत तिच्छ कटाच्छ नराच नवीनो।
राजकुमारि निहारि सनेह सों शंभु को साँचो शरासन कीनो।।

प्रश्न– (i) उपर्युक्त पद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।
अथवा पद्यांश के कवि एवं शीर्षक का नाम लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) शिव का धनुष सनाथ कैसे हो गया?
(iv) राजकुमारी को स्नेहपूर्वक देखने पर शिव के धनुष का नाम शरासन कैसे हो गया?
(v) प्रस्तुत पद्य पंक्तियों में कौन-सा अलंकार है?

(छ) प्रथम टंकोर झुकि झारि संसार मद,
चंड कोदंड रह्यो मंडि नव खंड को।
चालि अचला अचल घालि दिगपाल बल,
पालि ऋषिराज के बचन परचंड को।
सोधु दै ईश को, बोधु जगदीश को,
क्रोधु उपजाइ भृगुनंद बरिवंड को।
वाधि वर स्वर्ग को, साधि अपवर्ग, धनु-
भंग को शब्द गयो भेदि ब्रह्मांड को।।

प्रश्न– (i) उपर्युक्त पद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।
अथवा पद्यांश के कवि एवं शीर्षक का नाम लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) सम्पूर्ण संसार के अभिमान को किसने नष्ट कर दिया?
(iv) धनुष टूटने की ध्वनि से कौन विचलित हो गये?
(v) प्रस्तुत पद्य पंक्तियों में कौन-सा अलंकार है?

➡ दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. निम्नलिखित काव्य-सूक्तियों की सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिए—
(क) जानकि के जनकादिक के सब फूलि उठे तरुपुण्य पुराने।।
(ख) ऋषिहि देखि हरष्यो हियो, राम देखि कुम्हलाइ।
(ग) आपने आपने ठौरनि तौ भुवपाल सबै भुव पालै सदाई।
2. "आचार्य केशव को हृदयहीन कवि कहा गया है।" अपनी पढ़ी हुई रचनाओं के आधार पर पक्ष या विपक्ष में अपना मत प्रस्तुत कीजिए।
3. "आचार्य केशवदास को विभिन्न रसों के वर्णन में कहाँ तक सफलता मिली है।" समुचित उदाहरणों के साथ स्पष्ट कीजिए।
4. "केशव की रचनाओं में उच्चकोटि का कलात्मक सौष्ठव दृष्टिगत होता है।" उदाहरणों के साथ अपना मत प्रकट कीजिए।

अथवा

केशव के काव्य के कला-पक्ष की समीक्षा कीजिए।

5. "केशव ने प्रसंगानुकूल भाषा का प्रयोग किया है।" सोदाहरण इस कथन की पुष्टि कीजिए।
6. 'केशव को कठिन काव्य का प्रेत' कहना कहाँ तक उचित है। तर्कपूर्ण उत्तर दीजिए।
7. केशवदास का जीवन-परिचय लिखिए।
8. केशव की काव्यगत विशेषताओं को निरूपित कीजिए।
9. "केशवदास के काव्य में कहीं-कहीं हृदयहीनता देखने को मिलती है।" सप्रमाण उत्तर दीजिए।

➥ लघु उत्तरीय प्रश्न

1. केशव की रचनाओं की सूची बनाइए।
2. केशव की भाषा-शैली लिखिए।
3. सीता के स्वयंवर की संक्षिप्त कथा अपने शब्दों में लिखिए।
4. केशव के अलंकार-विधान पर एक अनुच्छेद लिखिए।
5. केशव के पिता एवं पितामह का क्या नाम था?
6. केशव की संवाद-योजना की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

➥ काव्य-सौन्दर्यात्मक प्रश्न

1. निम्नलिखित पंक्तियों में काव्य-सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए—
   (क) ईश मनौ वसुधा में सुधारि सुधाधर मण्डल मंडि जोन्हाई।
   (ख) ये सुत कौन के सोभहि साजे? सुन्दर श्यामल गौर विराजे।
2. अनुप्रास अलंकार का लक्षण बताते हुए प्रस्तुत पाठ से एक उदाहरण लिखिए।

●●●